ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 103-104

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

कालिदास के ग्रन्थों में प्रकृति का आकलन

संध्या पाण्डेय

शोध अध्येत्री – हिन्दी विभाग म0गाँ0चि0ग्रा0विसवविद्यालय, चित्रकूट, सतना, (म0प्र0), भारत

Received- 25.02.2020, Revised- 29.02.2020, Accepted - 06.03.2020 E-mail: shakil1782@gmail.com

सारांश : *महाकवि कालिदास संस्कृत भाषा के सबसे महान कवि एवं नाटककार थे। कविगुरू महाकवि कालिदास की गणना भारत में ही नहीं वरन् संसार के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों में की जाती है। इन्होंने नाट्य, महाकाव्य तथा गीतिकाव्य के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है।*

महाकवि कालिदास के जन्म के विषय में काफी मतभेद है। परन्तु विद्वान प्रथम शताब्दी पूर्व इनके जन्म का काल मानते हैं। महाकवि कालिदास द्वारा रचित कुल छोटी–बड़ी लगभग चालीस रचनायें हैं। इनमें मात्र सात ही ऐसी रचनायें हैं जिन्हें विद्वानों ने कालिदास द्वारा रचित माना है। जिनमें से तीन नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोवर्शीयम् और मालविकाग्निमित्रम् हैं और दो महाकाव्य रघुवंषम् और कुमारसंभवम् एवं ऋतुसंहार, मेघदूतम् महाकवि कालिदास जी की सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ है, अभिज्ञानशाकुन्तलम् ग्रन्थ के कारण इन्हें प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। जिसका विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। महाकवि के दूसरे नाट्क विक्रमोर्वशीय तथा मालविकाग्निमित्रं उत्कृष्ट नाट्य साहित्य के उदाहरण हैं।

कुंजीभूत शब्द– *नाटककार, साहित्कारों, महाकाव्य, गीतिकाव्य, अभिज्ञानशाकून्तनम्, प्रकृति, पहचान, गणना।*

संस्कृत भाषा में भाव शैली, अलंकार के साथ यथार्थता समागत है। बानीर की बेल पर बैठे हुए पक्षी के चित्र से और उनकी ध्वनि, स्वर की ह्रदय पक्ष का वर्णन किया गया है जो चित्रकार की तूलिका की अपेक्षा कवि की वाणी का सामर्थ है। कवि की कला में चित्र और वाणी रूप और शब्द दोनों का समावेश है।

संस्कृत भाषा की निसर्गतः बड़ी ही कोमल और मधुर है। संस्कृत वाणी के कवि सौन्दर्य तथा माधुर्य के उपासक होते हैं। ब्रह्मा प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण संस्कृत काव्यों में विशेषतः प्राचीन काल से प्राप्त होता है। प्रकृति को संस्कृत काव्यों में उभय रूप चित्रित की गयी है। कालीदास और भवभूति के वर्षा के आगमन का वर्णन सीधी–सीधी यथार्थता से नीचे लिखी पंक्तियों में रख दिया गया है–

आषाढ़स्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुम्।
श्रयति शिखरमद्रेर्नूतनस्तोयवहः।।(मेघदूतम्)
(उत्तररामचरित)

जल से भरा हुआ मेघ एवं बादलों का वर्णन है एवं रघुवंशं के 4/34 "प्राप तालीवनश्याममुपकण्ठं महोदयेः में पम्पा सरोवर के चित्र का सजीवन वर्णन है। कविवर कालिदास का प्रकृति के ह्रदय में किसी गूढ़ रीति में अमूक भावों की प्रेरणा करने वाली शक्ति है। प्रकृति के मनोहर दृश्य अथवा श्रव्य का मनुष्य के ह्रदय के साथ सम्बन्ध है। इसमें कालिदास की प्रकृति के प्रति भाव प्रेरक शक्ति यथार्थ रूप में है। जिसका इस पंक्ति के माध्यम से पता चलता है–

रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्,
पर्यत्सुकीभवति यत्सुखितोऽपि जन्तुः।
तन्चेतसा स्मरति नूनमबोधपूर्व,
भाविस्थिराणि जननान्तरसाह्रदानि।।

महाकवि का प्रकृति प्रेम– प्रकृति भी मनुष्य के साथ–साथ सुख दुख में सहानुभूति प्रकट करती है। मनुष्य एवं प्रकृति एक दूसरे के पूरक हैं। महाकवि कालिदास प्रकृति के साथ आनन्द का अनुभव करते हैं।

महाकवि प्रकृति को सजीव एवं मानवीय भावनाओं से ओत–पोत मानते हैं। इसकी पुष्टि कालिदास अपने ग्रन्थ अभिज्ञानशाकुन्तलम् में इस प्रकार किया है। जिसमें शकुन्तला वृक्षों को सगा भाई और लताओं को अपनी बहन समझती है। महाकवि की कल्पना में शकुन्तला एक प्रकृति कन्या है, जिसने प्रकृति रूपी वृक्ष, लताओं को धारण किया है। केसर वृक्ष के पास खड़ी हुई उसकी प्रिय लता के तुल्य सुन्दर लग रही है। इसमें दुष्यन्त वन में विचरण करते समय मृगों की दृष्टि में शकुन्तला की सुन्दरता को देखता है। शकुन्तला ने पौधों की सींचा उन्हीं के साथ पली–बढ़ी उन्हें बढ़ते देखा एवं उन पौधों पर पुष्प आने पर शकुन्तला ने उस दिवस को उत्सव की तरह मनाया। दुष्यन्त एवं शकुन्तला की विदाई में प्रकृति ने शकुन्तला को उपहार दिये। शकुन्तला के आभूषण के रूप में मोगरे के फूल एवं लतायें उनके आभूषण बने। विदाई के समय सम्पूर्ण आश्रम दुखी है। मृगों के मुख से चारा छूट रहा। वह उदास हैं। मयूरों का नृत्य (स्थिर रूप) में रूका हुआ दिखता है। पौधे अपने पत्तियों एवं फूलों को गिराकर इस विरह वेदना की व्याख्या कर रहे हैं। कालिदास की रचनाओं में सूर्योदय के रंग एवं चन्द्रमा के अस्त होने का सुन्दर वर्णन है। यह मनुष्य को ज्ञान देता है कि सुख एवं दुख एवं दूसरे के पूरक है यह परिवर्तनशील है।

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

महाकवि ने शाकुन्तलम् में नायक, नायिकाओं के चित्रण एवं सौन्दर्य के दर्शाने के लिए प्रकृति युक्त पुष्प, लता, सूर्य, चन्द्र आदि सभी ऋतुओं का वर्णन यथास्थान प्रस्तुत किया है। जो देखने में अत्यन्त सजीव एवं मनमोहक प्रतीत होते हैं।

"अंधरः किसलयरागः कोमल विटपानुकारणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमंगेषु सन्नद्दम्।।"

इस श्लोक के माध्यम से कालिदास ने शकुन्तला के सौन्दर्य को पुष्प के समान कोमल अंगों, भुजाओं से सुशोभित अत्यन्त सुन्दर वर्णन किया है। महाकवि के प्रत्येक रचनाओं के पद्य में सौन्दर्य चित्रात्मकता विद्यमान है जो उस समय के सामाजिक परिवेश एवं उनकी कलात्मक सोच को प्रदर्शिता करता है। महाकवि के ग्रन्थों में मेघदूतम्, रघुवंशम्, ऋतुसंहारम्, विक्रमोवशीय इत्यादि में जिसका विवरण देखा गया है। कालिदास की संस्कृत साहित्य में प्रकृति के नाना रूपों के (नयनाभिराम) दृश्य के नाम से विश्व–विख्यात् कृति है।

कालिदास ने अपने समस्त काव्यों एवं नाटकों में प्रकृति का निरूपण तो किया है, परन्तु स्वतंत्र रूप से ऋतुसंहारम् एवं मेघदूतम् में प्रकृति चित्रण की रचना की है। जो उनके प्रकृति प्रेम का द्योतक है, जिसका सजीव वर्णन इस पद्य से प्राप्त होता है।

'प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः सदावगाहक्षतवारिसंचयः।
दिनांतरम्योस्म्युपशांतमन्मथो निदाधकालोस्यमुपागतः प्रिये।।

प्रिये ग्रीष्म ऋतु आ गयी है। सूर्य की किरणें प्रचण्ड हो गयी है। चन्द्रमा सुहावना लगने लगा है। निरन्तर स्नान करने के कारण कुँओ, तालाबों का जल प्रायः समाप्त हो गया है। सायं काल मनोरम लगने लगा है तथा काम का वेग स्वयं शांत हो गया है। इसी प्रकार महाकवि का वर्षा तथा अन्य ऋतुओं का वर्णन सजीवतापूर्वक है। मेघदूतम् में प्रकृति एवं मानव के बीच सामंजस्य स्थापित किया गया है। पूर्व मेघ में प्रधानता प्रकृति बाह्य स्वरूप का चित्रण है। मेघदूतम् में वर्षा ऋतु का अत्यन्त सुन्दर वर्णन है। जिसमें समस्त जड़, चेतन पदार्थों का निरूपण है। जिसमें मेघ जिस मार्ग से होकर आगे निकल जाता है उस मार्ग में प्रकृति युक्त नवीन धारा से अपनी छाप छोड़ जाता है।

भारतीय काव्य–साहित्य में मेघदूतम् महाकवि की सर्वश्रेष्ठ रचना है। जिसमें वैदिक साहित्य में कालिदास ने प्रकृति के बीच अतिशय और मनोरम सतत संचरणशील मेघ को दूत बनाकर अत्यन्त आत्मीय वर्णन प्रस्तुत किया है। हिमालय के पहाड़ों की तलहटी में पर बसा हुआ आश्रम एवं पर्वतों के शिखर पर बैठे हुए हिरण समीप बहती हुई नदियों की धारा और रेत में डूबे हुए हंस विचरण करती हुइहिरणी यह सारा रमणीय प्राकृतिक चित्रण का वर्णन महाकर्वि के काव्यों में प्रत्यक्ष सा प्रतीत होता है।

ऋतुसंहारम में महाकवि ने वस्तु और प्रकृति दोनों का पर्याप्त चित्रण किया है। इसमें प्रकृति का सजीव चित्रण एवं उसके प्रति गहरी सहानुभूति को दर्शाया है। भारतीय प्राकृतिक दृश्यों को विशद् रंगों में चित्रित करने की कुशलता केवल महाकवि के ग्रन्थों में मिलती है। जैसे– शरद ऋतु, हेमन्त, वर्शा, शिशिर, बसन्त सभी ऋतुओं का कुशलतापूर्वक वर्णन है। जैसे– नववधु को शरद ऋतु से, बसन्त ऋतु में खिलते हुए कमल का वर्णन, हेमन्त में लहलहाते हुए खेतों का वर्णन आदि प्राकृतिक सुन्दर दृश्यों का वर्णन प्राप्त होता है। कुमारसम्भवम् के तृतीय सर्ग में किश्किन्धा में बसन्त ऋतु का वर्णन किया है।

निष्कर्ष–महाकवि कालिदास के लिए प्रकृति यन्त्रक्त और निर्जीव नहीं है। महाकवि ने मानव चित्रण को भी प्रकृति के पेड़–पौधों और पर्वतों, नदियों के समकक्ष प्रदर्शित किया है। महाकवि की कृतियों में खिले हुए फूल उड़ते हुए पक्षी और उछलते, कूदते पशुओं का वर्णन दिखाई देता है ये सभी विवरण कालिदास के प्राकृतिक सौन्दर्य एवं मानव मन के विभिन्न रूपों की आकांक्षाओं को प्रकट करते हैं। महाकवि के लिए नदियाँ, पर्वत, वन, वृक्ष सभी में चेतना विद्यमान है। जैसा कि पशुओं और देवी में है। महाकवि की रचनाओं से विश्व के चित्र एवम् मूर्ति कलाकार प्रेरित होकर भारतीय पारम्परिक चित्रकला का अध्ययन कर उसको उत्कर्ष तक पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं। महाकवि कालिदास की रचनाओं एवं कृतियों को देखकर यह ज्ञात होता है कि वह विविध कलाओं के ज्ञाता थे। इनकी रचनाओं में– काव्य सौन्दर्य का बोध होता है। इनकी रचना ऋतुसंहार में बारहमासा चित्र एवं विभिन्न ऋतुओं का वर्णन है। कालिदास के काव्यों में नारी के विविध आयामों का वर्णन स्पष्ट दिखायी देता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अभिज्ञानषाकुन्तलम्, लेखक पद्य श्री द्विवेदी आचार्य कपिलदेव, पृ0–691
2. मेघदूतम्– डॉ0 आर0बी0 शास्त्री, पृ0–20
3. रघुवंशम्– डॉ0 त्रिपाठी, कृश्णमणि, प्रकाशन– चौखम्भा सुरभारती वाराणसी।
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास– आचार्य बलदेव उपाध्याय, प्रकाशक– शारदा निकेतन 2001, पृ0सं0–111
5. कालिदास ग्रन्थावली– पण्डित रामतेज शास्त्री चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, 2014
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ0 ए0बी0 कीथ, मोतीलाल वाराणसी प्रकाशक, 2007, पृ0सं0–8

*****